International Journal of Education and Science Research Review
Volume-3, Issue-2 April- 2016 E-ISSN 2348-6457
P-ISSN 2348-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

इंटरनेट का के दुष्प्रभाव

Anju Rani
Lecturer
Arya Kanya Inter College
Sadar, Meerut

इंटरनेट आधुनिक विज्ञान का एक ऐसा आविष्कार है जिससे पूरी दुनिया को समेट दिया है। इसके माध्यम से हम घर बैठे विश्व के किसी कोने में रहने वाले व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं, उससे बातें कर सकते हैं, उसे देख सकते हैं, विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और वे सब कुछ जान सकते हैं, जो इंटरनेट पर उपलब्ध है। अपनी इसी ज्ञान पिपासा को शांत करने के लिए लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करते हैं। दूसरों से सम्पर्क बनाये रखने के लिए ऑनलाइन रहते हैं और अपडेट रहने की कोशिश करते हैं। आज इंटरनेट से हमारे देश और समाज को बहुत लाभ मिल रहा है लेकिन इससे होने वाला नुकसान भी समाज के सामने आ रहा है, जिसे विशेषज्ञों द्वारा इएडी (इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर) नाम दिया गया है।

इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर

इएडी का मतलब है—इंटरनेट का हद से ज्यादा उपयोग करना। हमारे देश में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की उम्र लगभग 14 से 40 वर्ष के बीच में है और इस उम्र में बच्चे, किशोर व युवा लोग इंटरनेट का इस तरह इस्तेमाल करने लगे हैं, जैसे उन्हें इसकी लत लग गई हो। हमारे देश में नशे की आदत सबसे अधिक युवाओं को ही है और कभी किसी न सोचा भी नहीं होगा कि इंटरनेट हमारे समाज व देश के लिए इतना घातक बन जाएगा कि हमारे देश की युवा पीढ़ी नशे की तरह इसकी गिरफ्त में होगी और आज ऐसा ही हो रहा है। आज देश की नई पीढ़ी व युवा पीढ़ी, दोनों ही 'इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर' नामक बीमारी की चपेट में आ रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस मामले को गंभीरता से न लिया गया तो बहुत जल्द इसके गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं। देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई और उसके समीपवर्ती शहर पुणे में तो इंटरनेट एडिक्टेड क्लीनिक की शुरूआत भी हो गई है। ये एडिक्शन उस समय और बढ़ जाता है जब ये गेमिंग, पोर्लोग्राफी, ऑनलाइन शॉपिंग और सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर अपना समय बिताता है, अपने इसी एडिक्शन के कारण यह स्थिति इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर की पहली स्टेज मानी गई है और इस तरह यहीं से इस एडिक्शन की शुरूआत हो जाती है। ईईएडी के जो लक्षण इंटरनेट एडिक्ट युवाओं में देखने को मिल रहे हैं—हर दिन 5 से 10 घंटे ऑनलाइन होना, घर से बाहर निकलने का वक्त कम होते जाना, भोजन व काम करने में कम समय बिताना, भोजन मॉनिटर के सामने ही करना, दोस्तों व परिवार वालों से मिलने में कतराना, अपना ईमेल बॉक्स दिन में कई बार चेक करना, खुद को बहुत अच्छा नेट यूजर समझने लगना, पढ़ाई करते हुए भी ऑनलाईन रहना और अपने कमरे में अकेले रहते इंटरनेट यूज करते हुए राहत महसूस करना आदि।

इस समय देश के कई इलाकों में नेटसर्फिंग की लत को फिलहाल 'एडिक्शन या लत' के अन्तर्गत नहीं रखा जा रहा है, लेकिन इसके लक्षण युवाओं में उभरने लगे हैं। कई युवाओं की हालत ऐसी हो चुकी है कि किसी दिन यदि वे नेट का उपयोग न करें तो उन्हें अजीब सा महसूस होने लगता है। जिस तरह युवा वर्ग इंटरनेट का आदि हो रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि बहुत जल्द ही देश के हर छोटे—बड़े शहरों में इसके रोगी देखने को मिल सकते हैं। मनोचिकित्सकों का कहना है कि वर्तमान समय में अधिक लोग इस बीमारी के चंगुल में नहीं आये हैं, लेकिन यह सुखद स्थिति ज्यादा दिनों तक नहीं बनी रह पाएगी, क्योंकि अब मोबाईल पर भी नेट चलाया जा रहा है और लोग इसका इस्तेमाल बहुतायत से कर रहे हैं यदि कोई व्यक्ति इंटरनेट का बहुत अधिक इस्तेमाल करता है और फिर उसे इस सुविधा से वंचित रखा जाए तो इसके अन्दर शीघ्र ही इससे सम्बन्धित शारीरिक एवं मानसिक विकास उभरने लगेंगें। यदि इस लत से युवा पीढ़ी को समय रहते नहीं निकाला गया तो समाज व परिवार के लिए इसके कारण बड़ी परेशानियाँ खड़ी हो सकती हैं। वर्तमान में इंटरनेट का प्रयोग करने में भारत का स्थान एशिया में तीसरा और विश्व में चौथा है।

चाईनीज एकेडमी ऑफ साइंसेस के शोधकर्त्ताओं ने एक प्रयोग के अन्तर्गत 14 से 21 वर्ष के युवाओं की ब्रेन मैपिंग से यह पता लगाया है कि प्रयोग में सम्मिलित इस उम्र के आधे से अधिक लोग इंटरनेट एडिक्शन डिसऑर्डर के शिकार हो चुके हैं। इनके दिमाग में वही लक्षण पाए गए जो एक शराब और जुआ खेलने के आदी व्यक्ति में पाए जाते हैं। महानगरों व बड़े शहरों में यह मानसिक बीमारी इस कदर बढ़ चुकी है कि कई युवाओं को स्वास्थ्य सुधार केन्द्र में भर्ती कराना पड़ रहा है। देश के युवाओं में अब इस बीमारी के लक्षण उभरने शुरू हो चुके हैं। एक सर्वे से मिली जानकारी के अनुसार यदि जल्दी ही इस पर नियंत्रण नहीं पाया गया तो एक नई विकृति पैदा हो सकती है। व्यक्ति नशा तभी करता है, जब वह सुख चाहता है, अपने दुःख को दूर करना चाहता है, सब कुछ भुलाना चाहता है और साथ ही अपना अकेलापन भी दूर करना चाहता है। इंटरनेट उसे सब कुछ देता है और इसी कारण आज की युवा पीढ़ी इंटरनेट के नशे की ओर बढ़ रही है।

कल्पवृक्ष बन गया है इंटरनेट—सारे संसार को जोड़ने वाला इंटरनेट एक ऐसा कल्पवृक्ष के समान बन गया है जिससे लगभग हर जिज्ञासा शांत हो सकती है। हर कामना की पूर्ति हो सकती है। आध्यात्मिक ज्ञान भी मिल सकता है और आतंकवाद की शिक्षा भी। घर बैठे रेलवे टिक्टि भी बुक किया जा सकता है और दूसरों के बैंक खाते भी लूटे जा सकते हैं। यौन विकृतियों और आपराधिक कार्यों के लिए इंटरनेट का बढ़ता हुआ दुरुपयोग इस बीच संसार भर की सरकारों का सबसे बड़ा सिरदर्द बन गया है। इंटरनेट ज्ञानी ही नहीं अज्ञानी भी बनाता है। इंटरनेट के माध्यम से हर समय हर तरह की जानकारी मिल सकती है, तो फिर कुछ याद रखने या नोट करने का कष्ट ही क्यों किया जाए? पश्चिमी देशों के छात्रों का सामान्य ज्ञान इसी कारण अब रसातल में जा रहा है।

इंटरनेट से ज्ञान चोरी—कम्प्यूटर और इंटरनेट की बलिहारी से पश्चिमी देशों में हाथ से लिखने की आदत तिरोहित होती जा रही है। भाषा ज्ञान घटता जा रहा है। लोग अपनी मातृभाषा तक को व्याकरण और वर्तनी की गलतियों के बिना सही ढंग से लिख नहीं पाते। यहाँ तक कि डॉक्टरेट (पीएच—डी0) के लिए अपना शोधप्रबन्ध भी लोग स्वयं लिखने के बदले धड़ल्ले से इंटरनेट से लेकर कॉपी—पेस्ट करने लगे हैं।

इंटरनेट लती लातों का देवता—कम्प्यूटर और इंटरनेट का प्रचार प्रसार बढ़ने से केवल अश्लीलता की ही समस्या नहीं पैदा हो रही है, भाषा—ज्ञान में भी गिरावट आ रही है, शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य भी गिर रहा है। अपराध और हिंसावृत्ति भी बढ़ रही है। शराब के नशेड़ी की तरह ही इंटरनेट का लती भी एक लातों का ऐसा देवता सिद्ध हो सकता है जिस पर बातों का कोई असर नहीं होता।

सुझाव

- यदि इसे रोकना है तो सबसे पहला कदम इससे सतर्क और सावधान रहना ही है, ताकि युवा पीढ़ी इंटरनेट से होने वाले इस नशे के प्रति जागरूक रहे।
- दूसरा कदम यह है कि आवश्यकता से अधिक इंटरनेट प्रयोग से बचें जितना जरूरी है, उतना ही प्रयोग करें, अन्यथा अति करने से नुकसान तो उठाना पड़ सकता है।
- तीसरा कदम यह है कि घर परिवार के परिजन व शिक्षकगण इएडी के बारे में जानकारी रखें और इसे अन्य लोगों को भी बताएँ।
- यदि परिवार के बच्चों व युवाओं में इसके लक्षण दिख रहे हैं तो अविलम्ब स्वास्थ्य केन्द्रों से मदद लें और उन्हें अपना स्नेह—अपनत्व भरा सहयोग दें।
- इसके अतिरिक्त और भी सम्भव उपाय किये जा सकते हैं, तभी हम आधुनिक टेक्नोलॉजी की इन नई उभरती हुई विकृतियों से उबर सकेंगें और इनका उपयोग करने के साथ—साथ स्वस्थ्य रह सकेंगें।